॥ ॐ नमो भगवते शाक्यसिंहाय तथागतयाऽर्हते ॥

॥ दुर्गति परिशोधन हृदयसूत्र धारणी ॥

॥ ॐ नमो भगवते शाक्यसिंहाय तथागतयाऽर्हते ॥

॥ दुर्गति परिशोधन हृदयसूत्र धारणी ॥

॥ दिवंगत शान्त रत्न वज्राचार्य जुया पुण्य स्मृति देछानागु जुल ॥

सम्पादन
सर्वज्ञ रत्न वज्राचार्य मन्त्रसिद्धि महाविहार
सवलबहाः यें

पिदंगु दिं :
ने.सं. ११३३ थिंलागा, द्वितीया
२०६९-०९-१५

पिकानः
स्वयम्भू प्रिन्टिङ्ग प्रेस

ओँ नमो बुद्धाय । ओँ नमो धर्माय । ओँ नमः सघाय ।ओँ नमो शाक्यसिंहाय ।
ओँ नमः श्री वज्रसत्त्वायः ॥ ओँ नमो भगवते सर्वदुर्गति परिशोधनराजाय ॥ ओँ वज्रधिष्ठान
समय हूँ ॥ ओँ शोधय २ सर्वपाप विशोधय शुध्दे विशुध्दे सर्वकर्मा बरण विशुध्दे स्वाहा ॥
ओँ शोधय विशोधय सर्वपाप सर्व सत्त्वेभ्य हूँ ॥ ओँ सर्वपापं विशोधनी हूँ फट् हूँ ॥
ओँ नमो भगवते सर्व दुर्गती परिशोधनराजाय तथागतायाऽर्हते सम्येकसम्बुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ओँ
शोधने २ विशोधने २ सर्वपाप विशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मा वर्णविशोधने स्वाहा ॥

ओँ सर्ववित सर्वावरणानी विशोधय हन २ हूँ फट् ॥ ओं सर्ववित हूँ ॥ ओं सर्ववित ह्रिं फट् ॥
ओँ सर्ववित आ ॥ ओँ सर्ववित अ ए फट् ॥ ओँ सर्ववित ऊँ ॥ ओँ सर्ववित धी ॥ ओँ सर्ववित
हूँ ॥ ओँ सर्ववित न्हीं त्रँ ता फट् ॥ ओँ सर्ववित महादान पारमिता पुज्ये हूँ ॥ ओँ सर्ववित
महावज्रोद्भव शीलपारमिता पुज्ये ओँ ॥ ओँ सर्ववित महावज्रोद्भव क्षान्तिपारमिता पुज्ये ह्रीँ ॥ ३
ओँ सर्ववित महावजोद्भव विर्यपारमिता पुज्ये त्राँ ॥ ओँ सर्ववित सर्वापाय विशोधनि धम २
ध्यानपारमिता पुज्ये हूँ फट् ॥ ओँ सर्ववित सर्वदुर्गति परिशोधनी क्लेशोपक्लेश क्षेदनी पुष्पावलोकीनी

प्रज्ञापारमिता पुज्ये त्राँ ॥ ओँ सर्ववित सर्वपाप विशोधनी ज्ञानावलोकिनी प्रणिधी पारमिता पुज्ये ह्रिँ हूँ फट् ॥ ओँ सर्ववित सर्वपाप गन्ध नाशनी वज्रगंधो उपाय पारमिता पुज्य अः हूँ फट् ॥ ओँ सर्ववित रत्न कवत्याकर्षनी हूँ जः फट् ॥ ओँ सर्ववित नर्क उर्ध्दारणि हूँ हूँ फट् ॥ ओँ सर्ववित सर्वापाय गंन्धमोचनीय हूँ फट् ॥ ओँ सर्ववित सर्वापाय गति गहरन विशोधनी हूँ हो फट् स्वाहा । ओँ मैत्रिफरणाय स्वाहा ॥ ओँ अमोघ दर्शिनि हूँ ॥ ओँ सर्वापायं जह सर्वापाय विशोधनी हूँ ॥ ओँ सर्वशोकतमोनिर्घातन मति हूँ ॥ ओँ गन्ध हस्तिनि हूँ ॥ ओँ सुरंगमे हूँ ॥

ओँ गगन गलोचने हूँ ।। ओँ ज्ञानकेतु ज्ञानवति हूँ ।। ओँ अमृतप्रभे अमेृतवति हूँ ।। ओँ चन्द्रस्व
ब्यवलोकिनि स्वाहा ।। ओँ भद्रवति भद्रपाले स्वाहा ।। ओँ ज्वालनि महा ज्वालनि हूँ ।। ओँ वज्रगर्भे
हूँ ।। ओँ अक्षय हूँ हूँ ।। ओँ अक्षय कर्मा वरणविशोधने स्वाहा ।। ओँ प्रतिभान कुते स्वाहा ।।
ओँ समन्तभद्रे हूँ हिँ हुँ हूँ ।। ओँ गृन्ह वज्रसमय हूँ ।। ओँ वज्रज्वालानलार्क हूँ ।। ओँ अभिषिंचयामी
।। ओँ वज्रानल दह पच मथ रजे हूँ फट् ।। ओँ वज्रकर्मे हूँ ।। ओँवज्रवंध वं ।। ओँ वज्रवज्रे हूँ ।।
ओँ वज्रचक्रे हूँ ।। ओँ सर्ववित काय वाक चित्त प्रणामेन वज्रवधनां करोमि ।। ओँ सर्वतथागत

पूजोपष्ठानायात्मानं निर्यान्तयामि ॥ ओँ सर्वतथागत वज्रसत्व अभिषिंचयामि धिष्टीतस्यामां इति ॥
ओँ सर्ववित सर्वतथागतो पूजाभिषेकात्मानं निर्यान्तयामि ॥ ओँ सर्वतथागत गंध पूजा मेघ समुद्रस्फरण
समय हूँ ॥ ओँ सर्वतथागत वज्ररत्नाभिषिंचमां ॥ ओँ सर्ववित सर्वतथागत पूजा प्रवर्तनायात्मानं
निर्य्यान्तयामि सर्वतथागत वज्रधर्म प्रवर्तयमां ॥ ओँ सर्ववित सर्वतथागत वज्रकर्मान्य आत्मानं
निर्य्यान्तयामि ॥ ओँ सर्ववित सर्वतथागत वज्रधर कुरुषमां ॥ ओँ सर्ववित पुष्प पुजा मेघ समुद्रस्फरण
समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित बुद्धपूजा मेघ समुद्रस्फरण समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित आलोक पूजामेघ

समुद्रस्फरण समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित गंन्ध पूजा मेघ समुद्रस्फरण समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित बोध्यंग रत्नालंकार पूजा मेघ समुदस्फरण समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित हास्य लास्य रतिकृदासौख्यानुत्तर पूजामेघ समुद्रस्फरण समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित अनुत्तरवस्त्रलंकार पूजामेघ समुद्रस्फरण समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित वज्र पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित महावज्रोद्भव दान पारमिता पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित अनुत्तर महाबोध्यङ्गाहार शीलपारमिता पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित अनुत्तर महाधर्मावतार क्षान्तिपारमिता पूजामेघ समुद्रस्फरण

समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित संसार परित्यागानुत्तर महाविर्य्य पारमिता पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित अनुत्तर सौख्य विहार ध्यान पारमिता पूजामेघ समुद्रस्फरण समय हूँ ॥ ओँ सर्ववित अनुत्तर क्लेशक्षेदन महाप्रज्ञापारमिता पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित सर्वापाय पारमि पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित काय निर्यातन पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित वाक निर्यातन पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित चित्त निर्यातन पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित गुह्ये निर्यातन पूजामेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥

ओँ सर्ववित वज्राजते ॥ ओँ सर्ववित वज्रवंध तट ॥ ओँ सर्ववित तिष्ठ वज्र दृढोमेभव शाश्वतो
मे भव हृदय मे धितिष्ठ सर्वसिद्धि च मे प्रयच्छ हूँ हूँ ह ह ह ह ह ह हो। ओँ वज्र मूष्टिवं ॥ ओँ
सर्ववित अत्र हूँ हूँ हूँ ॥ ओँ सर्ववित शोधने २ सर्वपापनपनय हूँ ॥ ओँ सर्ववित सर्वापाय विशोधने
हूँ फट् ॥ ओँ सर्ववित सर्वाभरण विशोधने मूः हूँ फट् ॥ ओँ मुने २ महामुनय स्वाहा ॥ ओँ नमो
भगवते सर्वदुर्गति परिशोधन राजाय तथागतायाऽर्हते सम्यक सम्बुद्धाय तद्यथा ॥ ओँ शोधने २ विशेधने २
सर्वपाप विशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्वपाप विशुद्धे सर्वकर्मा वरण विशुद्धे स्वाहा ॥ ओँ सर्ववित वज्रचक्रे हूँ ॥

ओँ समय हूँ ॥ ओँ प्रतिच्छ वज्रे हूँ ॥ ओँ प्रति गृन्हत्वं इति महावलेति ॥ ओँ वज्रसत्व समयान्तरे चक्षु घातत्परे
उधारयति सर्वाक्षोभ्य वज्रचक्षु रनुत्तर ॥ ओँ सर्ववित वज्रा भिषिंचमां ॥ ओँ सर्ववित वज्रधात्येश्वरि हूँ ॥
अभिषिंचमां ॥ ओँ सर्ववित वज्रवज्राणी हूँ ॥ अभिषिंचमा ॥ ओँ सर्ववित रत्नवज्रीनी हूँ ॥ अभिषिचमां ॥
ओँ सर्ववित धर्मवज्रीनी हूँ ॥ अभिषिचमां ॥ ओँ सर्ववित कर्मवज्रीना हूँ ॥ अभिषिचमां ॥ ओँ टू टू वज्रतुष्ये हूँ १०
॥ ओँ वज्राधिपतित्वा मभिषिचमां ॥ ओँ सर्वतथागत सिद्धि वज्र समय तिष्ठ त्रयत्वा धारयामि वज्रसत्व हि हि
हि हि हूँ ॥ ओँ सर्ववित वज्राधिष्ठान समये हूँ ॥ ओँ सर्ववित दृश्य ज हूँ वं हो ॥ समयसत्त्वं समये हो ॥

ओँ मुने मुने महामुनय स्वाहा ॥

ओँ नमो भगवते सर्वदुर्गती परिशोधन राजाय तथागतायाऽर्हते सम्येकसम्बुद्धाय तद्यथा ओँ शोधने २ विशेधने सर्वपाप विशोधने शुद्धे विशुद्धे दिवर्गत अमुक नाम ध्ययस्य सर्वकर्मा वरण विशोधने स्वाहा ॥

(दुर्गतिपरिशोधन मण्डल स्तोत्र)

दुर्गत्युत्तरणी सेतु सर्वदुर्गति शोधकं ॥तथागत शाक्यसिंह नमे हूँ त्रिजगद गुरु ॥ ओँ सर्ववित
वज्रचक्रे हूँ ॥ ओँ समये हूँ ॥ ओँ प्रतिच्छ वज्रे हूँ ॥ ओँ वज्रवाक टकिजः हूँ ३ टकिराज हो ॥
नमस्ते शाक्यसिंहाय धर्मचकप्रवर्तकः ॥ त्रैधातुक जगत्सर्व शोधयेत्सर्वदुर्गति ॥
नमस्ते वज्रोष्णिषय धर्मधातु स्वभावत ॥ सर्वसत्वहितार्थाय आत्मतत्व प्रदर्शकः ॥
नमस्ते रत्नोष्णिषाय समन्तातत्वभावकः ॥ त्रैधातुक स्थित सर्वअभिषेक प्रदायकम् ॥

नमस्ते पद्मोष्णिषाय स्वभाव प्रत्यवेक्षकः ॥ आश्वासयंन्ति सत्वेषु धर्मामृतप्रवर्तक : ॥
नमस्ते विश्वोष्णिषाय स्वाभावकृत्यानुस्थितः ॥ विश्वकर्मकारोह्योषां सत्वानां दुःख शान्तये ॥
नमस्ते तेजोष्णिषाय त्रैधातुकस्वभावतः ॥ सर्वसत्त्वेश्वपायेषु सत्व दृष्ट्वा करिष्यति ॥
नमस्ते ध्वजष्णिषाय चिन्तामणिध्वंजधरः ॥ दानेन सर्वसत्वानां सर्वाशा परिपूरित : ॥
नमस्ते तीक्ष्णोष्णिषाय क्लेशोपक्लेशछेदक : ॥ चतुर्मारबलं भग्नं सत्वानां बोधिप्राप्तये ॥
नमस्ते छत्रोष्णिषाय आतपत्रं सुशोभितम् ॥ त्रैधातुकं जगत्सर्व धर्मराजत्व प्राप्तये ॥

लाश्यामाला तथा गीता नृत्यादेव्यश्चतुष्टयः ।। पुष्पाधूपा च दीपा व गंधादेवी नमस्तुते ।
द्धारमध्येस्थितावेश अङ्कुशपास्फोटकः ॥ श्रद्धादिभाव निर्जातं द्धारपालं नमस्तुते ॥
बेदिकादौ स्थिता ये च चत्वारिद्धारपारपार्श्वतः ॥ मूदितादौ दशे स्थिता बोधिसत्वान् नमस्तुते ॥ १४
ब्रम्हेन्दौ रौद्र चन्द्राकौं लोकपालाश्चतुर्दश : ॥ अग्नि-राक्षस-वायुश्च भूताधिपंति नमस्तुते ॥
अनेन स्तोत्रराजेन संस्तवेत् मण्डलाग्रतः ।वज्रघंण्ठाधरो मन्त्री इदं स्तोत्र मुदाहरेत् ॥

ओँ नमो हूँ यूः त्रां ह्रींः अः ओँ र्वसंस्कार परिशुद्धे धर्मते गगण समुद्गते स्वभाव विशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा ॥ ओँ अकारमुख सर्वधर्मानां माद्यनुत्पन्नत्वाद् हूँ हूँ हूँ ॥ ओँ वज्रदृध्वो भ्रुँ ॥ ओँ मुने मुने महामुनेय स्वाहा ॥ ओँ नमो भगवते सर्वदुर्गति परिशोधन राजाय तथागतायाऽर्हते सम्यकसम्बुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ओँ शोधने २ विशोधने २ सर्व पापविशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मा वरण विशोधने स्वाहा ॥ ओँ वज्रोतम हूँ फट् ॥ ओँ रत्नोतम त्रां ॥ ओँ पद्मोतम ह्रिं ॥ ओँ विश्वतम अः ॥ ओँ हूँ धि जिं ॥ ओँ वज्र हूँ यू त्रां न्ही अः ॥ ओँ सर्वसत्कार परिशुद्धे धर्मस्य गगन समुद्गते स्वभाव विशुद्धे महानय

परिवारे स्वाहा ॥ ओँ मुने २ महामुनय स्वाहा ॥ ओँ नमो भगवते सर्वदुर्गति परिशोधन राजाय
तथागतायार्हन्ते सम्यकसम्बुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ओँ शोधने २ विशोधने २ सर्वपाप विशोधने शुद्धे विशुद्धे
सर्वकर्मा वरण विशोधने स्वाहा ॥ ओँ सर्ववित द्धार घाटय हूँ ॥ ओँ सर्ववित वज्रचक्रे हूँ ॥ ओँ
वज्रसमय जः हूँ बं हो ॥ ओँ वजपुष्पे हूँ ॥ ओँ वज्रधुपे हूँ ॥ ओँ वज्रेदीपे हूँ ॥ ओँ वज्रगन्धे हूँ ॥ ओँ
सर्व तथागत धुप पूजां मेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्व तथागत पुष्प पूजां मेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ
सर्व तथागत दीप पूजां मेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥ ओँ सर्व तथागत गन्ध पूजां मेघ समुद्रस्फरण समये हूँ ॥

असमाचलाः समन्तसार धर्मिणः करुणात्मका जगति दुःख हारिणः ॥
असमन्त सर्ब्बगुणसिद्धिदायिनो असमाचलाः समवराग्रधर्म्मिणः ॥१ ॥
गगन समोपमकता न विद्यते गुणलेश रेणुकणिके प्य सीमिके ॥
सदसत्त्वधातुवरसिद्धिदायिषु विगतोपमेषु असमन्तसिद्धिषु ॥ २ ॥
सततामला करुणवेगतोत्थिता प्रणिधानसिद्धिरविरोध धर्म्मता ॥
जगतोर्थसाधनपरा समन्तीनी सततं विरोचति महाकृपात्मनाम् ॥ ३ ॥

न निरोधतां करुणचारिकाकुला वज्रतेत्रिलाकि वरसिद्धिदायिका ॥
अमितामितेषु सुसमाप्तितां गता गतिं गतेष्ठपि अहो सुधर्म्मता ॥ ४ ॥
त्रिसमये ग्र सिद्धि वरदा ददन्तु मे वर दानताग्रगतितां गताः सदा ॥
सकलास्त्रीलोकि वरदाग्रसाधका नाथा स्त्रियध्वगतिका अनावृताः ॥ ५ ॥

ओँ शोधने २ ओँ कंकनि २ ओँ रत्ने २ ओं अमोघा २ ओँ अमृते २ ओं पुण्य २ महापुण्य ॥ ओँ वज्रे सर्वपाप दहन वज्र हूँ फट् ॥ ओँ सर्वपाय विशोधने हूँ फट् ॥ ओँ सर्वकर्मा वरणनि भस्मिंकुरु हूँ फट् ॥ ओँ भ्रुँ विनासय वरणानि हूँ फट् ॥ ओँ द्रुं विश्वधया वरणनि हूँ फट् ॥ ओँ ज्वल २ धक २ हन २ वरणानि हूँ फट् ॥ ओँ सर २ प्रसरावरणानि हूँ फट् ॥ ओँ हन २ सर्वावरणानि स्फोटय हूँ फट् ॥ ओँ भृत २ सर्वावरणानि हूँ फट् ॥ ओँ ट ट सर्ववरणानि हूँ फट् ॥ ओँ छिन्द २ विद्रव सर्वपाप वरणानि हूँ फट् ॥ ओँ दह २ सर्व नरक गति हेतु हूँ फट् ॥ ओँ पच २ सर्व प्रेतगति हेतु हूँ फट् ॥

ओँ मथ २ सर्व तिर्य्यकगति हूँ फट् ॥ ओँ सर्वपाप विशोधनि धम २ धुपये २ हूँ फट् ॥ ओँ सर्व दुर्गती विशोधनि पुष्पा बिलोकिते हूँ फट् ॥ ओँ सर्वपाय विशोधनी ज्ञानावलोकने करी हूँ फट् ॥ ओँ सर्वपाय गति नासनि गंध हूँ फट् ॥ ओँ नरक गत्यांकर्षनि हूँ फट् ॥ ओँ सर्व नर कान्यू धारनि हूँ फट् ॥ ओँ सर्वपाय विशोधनी हूँ फट् ॥ ओँ सर्वापाप गति गहन विनासनि हूँ फट् ॥ ज.हूँ. वं. हो ॥ भगवते ही महाकारुनिकाय दृश्य हो ॥ ओँ पूण्य २ महा पूण्य अपरमितपुण्य अपरमितायुपूण्य ज्ञान सम्भारोपचिते सर्वसंस्कार परिशुद्धे धर्मते गगन समुद्गते स्वभाव विशुद्धे माहानय परिवारे स्वाहा ॥

ओँ अमृते २ अमृतोद्भवे अमृत संभवे अमृत विक्रांत गामिनि सर्वक्लेश क्षयंकरि स्वाहा ॥
ओँ कंकनि २ रोचनि २ त्रीरोचनी त्रीरोचनी सर्वकर्म परम्परानि सर्वसत्वानांच स्वाहा ॥ ओँ रत्ने २
महारत्ने रत्नसम्भवे रत्नकिरने रत्नमाला विशुद्धे शोधय २ सर्वपापा नपनय हुँ फट् ॥ ओँ अमोघां
प्रतिहत हर हर सर्ववरण विशोधनी हर २ हूँ फट् ॥ ओँ शोधने २ विशोधने २ सर्वकर्मा वरण विशोधने
स्वाहा ॥ ज. हूँ . वं. हो ॥ ओँ भगवन वज्रग्रहे ह्निँ समयसत्वं ओँ वज्र समये हूँ हूँ प्रतिच्छ वज्रे हूँ ॥
ओँ वज्र समये हूँ ॥ ओँ वज्र हासो घाट्य समय हूँ ॥ ओँ वज्र दृश्य हो ॥ ओँ वज्राभिषिंच आ ॥

ओँ रत्नाभिषिंच त्रां ॥ ओँ पद्माभिषिंच ह्निं ॥ ओँ कर्माभिषिंचअ ॥ ओँ वज्राभिषिंच हूँ ॥ ओँ रत्ना
कलशभिषिंच त्राँ ॥ ओँ पद्मा कलशा भिषिंच ह्निँ ॥ ओँ कर्मा कलशाभिषिंच अ ॥ ओँ मालाभिषिंच
त्रां ॥ ओँ वज्रयम्मक वर प्वनाभिषिंच त्रां ॥ ओँ बुद्ध मुदाभिषिचं हूँ ॥ ओँ वज्र मुद्राभिषिंच हूँ ॥ ओँ
रत्न मुद्राभिषिंच त्रां । ओँ पद्म मुदाभिषिंच ह्निं ॥ ओँ कर्म मुद्राभिषिंच अ ॥ ओँ वज्राभिषिंच हूँ
॥ त्रां ह्निं अः ॥ ओँ वज्र कलशाभिषिंच अ ॥ ओँ वज्र चकाभिषिंच भ्रुँ ॥ ओँ वज्र चकाधिपतित्वम
अभिषिंच ॥ ओँ ओँ ओँ ॥ हूँ हूँ ॥ त्रां त्रां अ ॥ ओँ वज्र धारिन्यअभिषिंच ओँ ॥ ओँ वज्र

तथागताभिषिंच हूँ ॥ आँ रत्न धारिन्याभिषिंच त्रां ॥ आँ पद्म धारिन्याभिषिंच ह्रीं ॥ आँ कर्म
धारिन्याभिषिंच अ ॥ आँ सर्व तथागत गुह्याभिषिंच आँ ॥ आँ वज्र गुह्याभिषिंच हुँ ॥ आँ
रत्न गुह्याभिषिंच त्राँ ॥ आँ पद्म गुह्याभिषिंच ह्रीँ ॥ आँ कर्म गुह्याभिषिंच अः ॥ आँ प्रज्ञा
गुह्याभिषिंच समयोगाभिषिंच हूँ अ ॥ आँ वज्राभिषिंच हूँ आ ॥ आँ वै आँ धृ आँ बि आँ क्ष
॥ आँ वज्रसयमे हूँ ॥ आँ वज्र प्रतिच्छ ध्वं धर्ममहोतमां ॥ आँ, इः, आँ, ईः, आँ, अः, आँ, यः, आँ,
ञँ, आँ, वं, आँ, यः, आँ, क्र, आँ, आ, ओ, व्रं, आँ, सो, आँ, अ, आँ, बु, आँ, बृ, आँ, शु आ श, आँ, र,

ओँ, क ॥ ओँ वज्र हूँ हूँ हूँ फट् ॥ ओँ वज्राग्र समये हूँ ॥ ओँ वज्राग्रह प्रतिच्छ समये हूँ ॥
फँ फँ फँ फँ ॥ ओं फिः ओं फेः ओँ फैः ओं फौःओं फँः ॥ जः हूँ. वं. हो ॥ फ फ फ फ ॥
ओँ भैरव भैरवी स्वाहा ॥ ओँ भा स्वाहा ॥ ओँ भि स्वाहा ॥ ओँ भू स्वाहा ॥ ओँ भे स्वाहा
॥ ओँ भै स्वाहा ॥ ओँ भो स्वाहा ॥ ओँ भौ स्वाहा ॥ ओँ भं स्वाहा ॥ ओँ भः स्वाहा ॥ ओँ
ओँ ओँ ॥ ओँ धि, ओं रु, ओँ कँ,ओँ गं, ओँ भृ,ओं कं ॥ ओँ हूँ.वं.हो ॥ ओँ प्रतिच्छ ध्व
महासत्वा वज्रधराज्ञायः ह ह ह ह हो ॥ ओँ पून्य २ महापून्य अपारमितायुपून्य ज्ञान संभारोपचिते

स्वाहा ॥ ओँ ह्रिं स्वाहा ॥ ओँ भ्रूँ स्वाहा ॥ ओँ जूं स्वाहा ॥ ओँ त्रां स्वाहा ॥ ओँ हूँ स्वाहा ॥
ओँ भ्रुँ द्रिं कु त्राँ हीँ ॥ ओँ वज्रधर रत्नधर पद्मधर विश्वधर तथागत समयानि कर्म तथागत
समय धारको हूँ ॥ ओँ सर्वतथागत प्रतिच्छ हो समयत्व हो ॥ ओँ सर्वतथागताभिषिंच वज्रधरआज्ञा
पयंति हूँ हूँ हूँ भ्रुँ ॥ ओँ वज्र वज्राभिषिंच हूँ हूँ ॥ ओँ वज्र रत्नाभिषिंच त्राँ ॥ ओँ वज्र पद्माभिषिंच
ह्रिं ॥ ओँ वज्र कर्माभिषिंच अ ॥ हुँ कँ ॥ ओँ सर्वतथागत ज्ञाने प्रवेस्यामि गृन्हवज्र सुसिद्धय ॥
ओं वज्रतिष्ठ हूँ ॥ ओँ सर्वकर्मानि कुरु बुद्धाना हूँ ॥ ओँ भ्रुँ ह्रीं वज्र वज्रणि धृट तिष्ठ हूँ ॥ ओँ

हूँ ॥ ओँ वज्र हूँ फट् ॥ ओँ दृढ वज्रे हूँ ॥ ओँ वज्र हूँ सः ॥ ओँ वज्र हूँ मः ॥ ओँ पशुपति निलकण्ठ उमाप्रिय स्वाहा ॥ हूँ हूँ ॥ ओँ वज्र घाटय समय प्रवेसय हूँ ॥ ओँ वज्रोदके हूँ ॥ ओँ हूँ २ वज्र समय पयश्यामि हूँ ॥ हूँ कार वज्रे हूँ ॥ हूँ कार वज्रो हूँ ॥ ओँ वज्र समाजः हूँ हूँ वं हो ॥ समयसत्वम् २ हन हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ॥ ओँ वज्र भृकुटि कोधानय सर्व रत्नाने ह्रि फट् ॥ ओँ वज्रदृष्टि कोधदृष्टि मारये २ हूँ फट् ॥ ओँ वज्र विश्व कोध कुरु कुरु सर्व विश्व रुपयाय सोधय हूँ फट् ॥ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ॥ त्रंः ह्रिं अ हूँ त्रंः ह्रिंः कः हूँ हे त्रां तह्रिः ह्रिं देह ॥ हूँ हूँ

हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ॥ ज हिं ॥ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ॥ अः अः हूँ त अ ॥ हूँ हूँ हूँ हूँ अ ॥ आँ आ हूँ ॥
आँ व हूँ श्री वज्रे हूँ ॥ आँ वज्र पुष्पे हूँ ॥ आँ वज्र धुपे हूँ ॥ आँ वज्रावलोकिते हुँ ॥ आँ वज्र
गंधे हूँ ॥ आँ रस वज्रे हूँ ॥ आँ वज्रसत्व संग्रहोदभव वज्ररत्न मनुत्तरः वज्रधर्म ग्राहिने वज्रकर्म
कूलोद्‌भव ॥ अग्र ततोपरि ब्रम्हा कपिरद्धारे २ द्रहभिपितोपरि विरुपाक्षस्या यमाय स्वाहा ॥ सर्व
भूतं भयंकुरु स्वाहा ॥ भृ भृ ष्वः भृ भृ सि षितोरीवीरुपाय स्वाहा ॥ आँ स्वशखा खे खु ख
स्वाहा ॥ आँ कुवेराय स्वाहा ॥ आँ जुं जुं जुं सिवे स्वाहा ॥ आँ ऊर्ध्द ब्रम्हने स्वाहा ॥

औँ सूर्या ग्रहा धिपतये स्वाहा ॥ औँ चन्द्रा नक्षत्राधिपतये स्वाहा ॥ औँ अध पृथ्वीव्यै स्वाहा ॥औँ
नागेभ्यः स्वाहा ॥ औँ असूरेभ्यः स्वाहा ॥ औँ सर्वरोग चित्तमुत्पादयामि सुरभे समय स्वाहा ॥
औँ वज्र सिद्धाय सुखमिति ॥ औँ गृन्ह वज्र समय हूँ ॥ औँ वज्र सयम प्रविशामि ॥ औँ सुँम्भनि
२ हूँ फट् ॥ औँ गृण्ह गृण्ह हूँ फट् ॥ औँ गृण्हापय २ हूँ फट् ॥ औँ आनय हो भगवन विद्याराज
हूँ फट् ॥ अःअःअःअः ॥ औँ वज्रावेश अ ॥ औँ सर्वपाप दहन वज्राय सर्वपाप दह स्वाहा ॥ हूँः
हूँ त्रः हिँ अ ॥ वज्रबेशे अ ॥ औँ सुंगभी २ ॥ औँ वज्र सत्व संग्र हो ॥ औँ प्रति गृन्हामि मम

सपरिवारस्य शान्ति स्वस्ति रक्ष रक्ष माँ महाबल ॥ ओँ वज्रसत्त्व स्वयं ते द्य चक्षुद् घाटय तत्परम्
॥ उद्घातयति सर्वाःक्षो वज्रचक्षु रनुत्तरंम् ॥ ओं वज्राधिपत्वा मभिषिंचामि दृढो मेभव ॥
जः हूँ.वं.हो.॥ हूँ फट् वज्राभिषिंच स्वाहा ॥ इदमवोचद्भगवान तत्मनाः शक्रब्रम्हादिदेव मानुष
असुर गन्धर्व यक्ष राक्षसादि हितसुखा प्राप्तये भगवतो भाषितम् सभ्यनन्दनइति ॥ आर्य सर्वदुर्गती
परिशोधनराजस्य तथागतायर्हन्ते सम्यकसंम्बुद्धास्य कल्पैक हृदय सुत्र समाप्तम् ॥

आशिका

दुर्गतिपरिशोधन हृदय सूत्र पाठयानागु पुण्यानु भावं दिवंगत (मदुमेस्य नां काये) दुर्गति मोचन जुया: सुगति प्राप्तज्वीमा, ज्ञाताज्ञाति सकल दिवंगत जुयावेपिं जि सकल पुर्खापिं फुकं सुगति प्राप्त जुया: निर्वाण मार्गफलया कामना याना। अग्निघत, क्षिरधार, अशिपत्र (तरवारया धांर कपेना च्वनीगु) वन्डिपत्र (मुलुपय न्यासि वनेगु), अविचि आदि झिंखुगु नर्कय् लाना च्वंपिं फुक्क याकनंहे मुक्त जुया भिंगु कुलय जन्म जुयेमा:। प्रेतलोकेय लाना अपार दु:ख सियाच्वेपिं अगतित्वय लानाच्वपिं जुसानं थुगु दुर्गति परिशोधन हृदय सुत्र पाठयानागु पुण्यद्धारा उगु दु:खं मुक्त जुया: सुखावति भुवने अमिताभ

तथागतया कुलये जन्मजुया: निर्वाण मार्गफल प्राप्तजुयेमा: अनुत्तरया सम्येकसंम्वोधिज्ञान लायेफयेमा: बुद्ध, धर्म संघ या गुण न्हयावले प्राप्त जुयोच्चवनेमा : ।

शत्‌जिव पाठयाकुपिं, पाठयापिं सकल परिवारया सुख समृद्धि प्राप्तजुया: रोग व्याधि मुक्त जुया: मैत्रीकरुणा जायेका सम्यक दुष्टिं स्वया: परोपकारी गुण कारी जुया: न्हयज्याना च्वने फयेमा: सकल तथागतपिनिगु सुदष्टि न्हयाबले न्यावले दयाच्वनेमा सकलसत्व प्रणीपिं उद्धार जुया: फुकसिया जीवन सुथांलाना मनं तुनाथ्यें ज्याखं पुवनेमा: सकसिया भिंजुंयमा कल्याण जुयेमा: मंगल जुयेमा । सुभाय । ॥ भवतु सर्वदुर्गति शोघनम ॥

पुष्पिका बाक्य

सं १०८७ साल चैत्र शुक्ल चौथि वृहस्पतिवार कृर्तिपूरसिंघ दुवाल तोल हर्ष कृति महाविहारया श्री बज्राचार्य भिमवज्रनं यल भिन्छेवहाया नन्दराज, प्रेमराज निम्ह छ्यपिन्त चयाबिया जुल षटगति प्राणिपिं उधार जूयमाल इति शुभम् ॥

ये धर्मा हेतु प्रभावा हेतुस्तेषां तथागता ॥हेवद तेषां च यो निरोध एवंबादी महाश्रमण ॥

मदुथाय छेँय वा विचाफय् बलय् ब्वनेगु धारणी स्त्रोत्र ।

यथा ते तथागत नित्यमनुत्तरायां सम्यक्सम्बोधौ परिणमितं तथाहं परिणामयामि ।

ओं मुने मुने महामुने शाक्यमुने स्वाहा ।।दुर्गत्युत्तरणी सेतुं सर्वदुर्गति शोधकं । तथागत शाक्यसिंह नमे हं त्रिजगत गुरु ।।ओं नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागतायाऽर्हते सम्यकसम्बुद्धाय ।। तद्यथा ।। ओं शोधने २ विशोधने २ सर्वपापविशोधने शुद्धे विशेद्धे दिवंगत (मदुम्हेसिया नाम काय्) नामधेयस्य सर्वकर्मावरणविशोधने स्वाहा ।।

पञ्चबुद्ध धारणी

।। वैलोचन ।।

ओँ नमो भगवते वैरोचन प्रभुकेतुराजाय तथागतायऽर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।। तद्यथा ।। ओँ सूक्ष्मे २ समे २ शान्ते २ दान्ते २ समारोप्य अनारंवे तरंवे यशोवती महातेज निरालम्वे निराकले निवार्णे सर्वतथागत धिष्ठानाधिष्ठिते स्वाहा ।।

।। अक्षोभ्य ।।

ॐ नमो भगवत्ये आर्य अक्षोभ्याय तथागतायाऽर्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ कङ्कणि २ बाकनि २ बाकनि २ रोचनि २ त्रोतनि २ मोचनि २ संत्रासनि २ मन्त्रासय २ प्रतिहत २ सर्वजन्म परं परा निभ्य स्वाहा ॥

।। रत्नसम्भव ।।

ॐ नमो भगवत्ये रत्नसम्भवाय तथागतायाऽर्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ रत्ने २ महारत्ने रत्नसम्भवे स्वाहा ॥

॥ अमिताभ ॥

ओँ नमो भगवत्ये अमिताम्भाय तथागतायाऽर्हते सम्य्क्संबुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ओँ अमिते २ अमितोद्भव्ये अमितसंभब्ये अमितसिद्धे अमिततेजो अमितबिक्रान्ते अमितगामिनि अमितगगण कीर्तिकरे अमित दुन्दुभिषरे सर्वार्थशाधनि सर्वकर्म क्लेश क्षयङ्करि स्वाहा ॥

॥ अमोघसिद्धि ॥

ओँ नमो भगवत्ये अमोघसिद्धिय तथागतायाऽर्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ओँ सिद्धे २ सुसिद्धे स्वाहा ॥

।। दुर्गति परीशोधन धारणी ।।

ओँ नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोनराजाय तथागतायाऽर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।। तद्यथा ।। ओँ शोधने २ विशोधने २ सर्वपापविशोधने शुद्धे विशुद्धे दिवंगत यया नामधेयस्य सर्वकर्मावरणविशोधने स्वाहा ।।

नमस्ते शाक्यसिंहाय धर्मचक्रप्रवर्तकः ।। त्रैधातुक जगत्सर्व शोधयेत्सर्वदुर्गति ।।

नमस्ते वज्रोष्णिषय धर्मधातु स्वभावत ।। सर्वसत्वहितार्थाय आत्मतत्व प्रदर्शकः ।।

नमस्ते रत्नोष्णिषाय समन्तातत्वभावकः ।। त्रैधातुक स्थित सर्वअभिषेक प्रदायकम् ।।

नमस्ते पद्मोष्णिषाय स्वभाव प्रत्यवेक्षकः ॥ आश्वासयंन्ति सत्वेषु धर्मामृतप्रवर्तक : ॥
नमस्ते विश्वोष्णिषाय स्वाभावकृत्यानुस्थितः ॥ विश्वकर्मकारोह्योषां सत्वानां दुःख शान्तये ॥
नमस्ते तेजोष्णिषाय त्रैधातुकस्वभावतः ॥ सर्वसत्त्वेश्वपायेषु सत्व दृष्ट्वा करिष्यति ॥
नमस्ते ध्वजष्णिषाय चिन्तामणिध्वंजधरः ॥ दानेन सर्वसत्वानां सर्वाशा परिपूरित : ॥
नमस्ते तीक्ष्णोष्णिषाय क्लेशोपक्लेशछेदक : ॥ चतुर्मारबलं भग्नं सत्वानां बोधिप्राप्तये ॥
नमस्ते छत्रोष्णिषाय आतपत्रं सुशोभितम् ॥ त्रैधातुकं जगत्सर्व धर्मराजत्व प्राप्तये ॥

लाश्यामाला तथा गीता नृत्यादेव्यश्चतुष्टयः ॥ पुष्पाधूपा च दीपा व गंधादेवी नमस्तुते ।
द्धारमध्येस्थितावेश अङ्कुशपास्फोटकः ॥ श्रद्धादिभाव निर्जातं द्धारपालं नमस्तुते ॥
बेदिकादौ स्थिता ये च चत्वारिद्धारपारपार्श्वतः ॥ मूदितादौ दशे स्थिता बोधिसत्वान् नमस्तुते ॥
ब्रम्हेन्दौ रौद्र चन्द्राकौं लोकपालाश्चतुर्दश : ॥ अग्नि-राक्षस-वायुश्च भूताधिपंति नमस्तुते ॥
अनेन स्तोत्रराजेन संस्तवेत् मण्डलाग्रतः ॥ वज्रघंण्ठाधरो मन्त्री इदं स्तोत्र मुदाहरेत् ॥
थुलि दुर्गतिपरिशोधन मण्डल स्तोत्र जुल ।

।। शाक्यमुनि (बुद्ध) धारणी ।।

ओँ नमो भगवत्ये शाक्यमुनये तथागतायाऽर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।। तद्यथा ।। ओँ मुने २ महामुने शाक्यमुने ओँ हिलि २ मिलि २ किलि इट्टिके कटके केतुमूले अडमले अट्टे २ नट्टे २ वज्रे २ नट्ठवज्रे पस्य २ सपस्यानि सिध्यन्तु मन्त्रपदा महाकारुणिकाय स्वाहा ।।

।। आर्यावलोकितेश्वर धारणी ।।

ओं नमो आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महाकारुणिकाय ।। तद्यथा ।। ओँ चल चल, चिलि

चिलि, चुलु चुलु, कुलु कुलु, मुलु मुलु, हूँ हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् फट् पद्म हस्ते स्वाहा ॥

॥ प्यंगु योनीया भावना याये् ॥

यावन्तः सर्वेसत्त्वाः सत्त्वसंग्रहेण संगृहीता अण्डजावा जरायुजावा संस्वेदजावा उपपादुकावा रुपिणोवा अरुपिणेवा संगिणोवा असंगिणोवा नैवसंगिणोवा सर्वे ते सत्त्वा मया महामुद्रामन्त्रपदे प्रतिष्ठापयितब्या । ओं पद्मे २ महापद्मे पद्म गर्भे दिवंगत (मदुमेस्यू नाम.....काय्) नामधेयस्य सुखावत्यां लोकधातावनुगच्छन्तु स्वाहा ॥

ओं आ हूँ दिवंगत अमुक नामध्याय निर्वाण मार्गफल प्राप्ती कुरु हूँ स्वाहा फट् स्वाहा ॥ ३ ॥

देवानागाः सुरायक्षा गन्धर्वाश्च महोरगाः ॥ भूताः प्रेताः पिशाचाद्या सर्वैरागत्य पूजयेत् ।
सर्वपूजा प्रपूर्यन्तो बुद्धानां गुणवर्णनाम् ॥ अहोबुद्ध अहोबुद्धः साधुबुद्धो कृतोत्तमः । सर्वदुर्गति संशोध्य
सत्वानां बोधिप्राप्तये ॥ नरकप्रेततिर्यकच म्लेच्छादीर्घायुषो मराः ॥ करय वाक चित्त शुद्धिपन
दशकुशले प्रातियतः मिथ्यादृक्बुद्धकान्ताराः सुगतिं प्राप्तयेत् खलु ॥ अनेनचाहं कुशलेन कर्मणा
भवेयं बुद्धं नचिरेणलोके ।देशेयं धर्म जगतो हिताय मोचये सत्वान् बहुदुःखपीडितान् ॥

विधुत सर्वसंकल्पं भावाभावविवर्जितम् ।शाक्यसिंह नमस्यामि शुद्धं प्रकृतिनिर्मलम् ॥ त्यक्त्वा मृत्युं महाघोरं त्यक्त्वा वैतरणी नदीम् । त्यक्त्वा वै मानसं येन तं बुद्ध प्रणमाम्यहम् ॥ निरयातिर्यग्योनिश्च प्रेतदेवासुरानराः ॥ उत्तीर्ण भवकान्तारं तं बुद्धं प्रणमाम्यहम् ॥ क्वचाल ॥

ये धर्मा हेतुप्रभावा हेतु तेषां च तथागत ध्यवतषा यो निरोध एववादि मदाश्रमणं ।

सम्पादनया थःगु ख

भगवान शाक्यमुनि तथागत देवराज ईन्द्रया तसकं झ झः धायेक छयिपियातःगु नन्दन वनय च्वनाः देवराज ईन्द्रया अतिकं यःम्ह बिमल मणिप्रभ धयाम्ह देवपुत्र स्वर्ग भूवनं च्यूत जुयाः थिथि नरक भोगयाना तसकं अघोर दुखः सिया च्वंगु खं याना देवराज ईन्द्र थःगु मनयात चिइ मफुत ।

तसकं दुखः तायेका भगवान बुद्धया न्हनोःने च्वनाः विन्तियाना च्वन ।

भगवनान बुद्धं दुर्गति परीशोघन धारणी आज्ञाजुयाः थी नरक भोगयाना च्वंम्ह उम्ह देव पुत्रयात

उद्धार याना बिज्यात। अगाढ दुःख कष्ट मुक्तयानाः दुर्गति मोचन जुयाः भगवान बुद्धया प्रशेसायाना सकलसत्व प्राणिपिं नं थये तुं याकनं हेदुगेति मोचन जुयाः सुगति वास लायेमा धयागु कामना याःगु जुल। थुगु पूजा पाठ यानाया पुज्यानुभावं उम्ह देव पुत्र दुर्गति मोचन जुयाः याकन हे सुगति प्राप्तजुयाः भिंगु कुलेय् जन्मकमाः बिज्यात धयागु दुगति परिशोधन तन्त्रय तःगु दु।

सकल सत्व प्राणिपिं दुःख मुक्तजुयाः सकले उद्धार जुयमा धयागु हेतुं शाक्यमुनि तथागत अधिष्ठान याना बिज्याःगु थुगु दुर्गति परिशोधन हृदय धारणी मदुपिनिगु नामं न्हिथं (न्हि, न्हिसीया

पाठयाना बिल याःसा दुर्गति लानाच्वेपिं सकल प्राणिपिं उद्धार जुयाः सुगति प्राप्तज्वी। अपालं आप नरकनं हे सुगति प्राप्तजुवनी। अथेतुं अन्तरा भवय लाना अगति प्राप्त जुया च्वंपिं नं थुगु हृदय सुत्र पाठ यानागुया पुण्यानु भावंगति प्राप्तजुया षदगति थःगु कर्म भोग अनुसार जन्म काःवनी धकान धयातःगु दु। न्हयावले न्हयावलें सिपिं जक खनां म्हना च्वनिगु ईकु इकु धायाः नयागु म्हय मग्यनीगु व सिकं दुखः बियेगु आदिया निमित्तय नं थुगु धारणी पाठयाना बिल धासा थुग दुःखं मुक्त जुयावनी धयागु नं विश्वास दयाच्वंगु दु।

थुगु धारणी न्हापा स्वपुहृदय सूत्र धारणी नेसं ११३१ पौष महिना पिदंगु खः। ने स १०८७

साल किपूया हर्षकृति महविहारया भिभवज्रं च्वयातःगु हस्तलिखित सफुया अनुसार न्ह्यब्वया दुर्गति परिशोधन तन्त्र पाखेनं छुं छुं त्यासाकयाः न्ह्यब्वयागु जुल । मुल सफूया फोटोकपि मुसुंबहाःया किजा नरेन्द्रमुनि पाखें प्राप्त जुवःगु खः । उकिं किजा भाजुयात यक्वः यक्वः सुभाय् देछासें हानं थथे हे ग्वहालि याना बिज्याई धयाःगु मनंतुना च्वना ।

दुर्गतिपरिशोधन हृदय सुत्र धारणी सफूचा पिथनेत श्री खण्ड तरुमुल महाविहारया कुलपुत्रपिं सुधिर वज्राचार्य व सुजित वज्राचार्य मां करुणा देवी वज्राचार्य भौपिं ललिता वज्राचार्य व सुमिला वज्राचार्य छ्यपिं निश्चल व लिजः या सकल परिवारया धर्मचित्त उत्पत्ति जुया छेंया हामाः सकसिया

हनातयाम्ह अबु शान्तरत्न वज्राचार्य दिवंगत जुगु थौं नं दछि फुगुया पुण्यतिथिइ थुगु सफु पिथना गुरुवर पिन्त देछागु जुल । थुगु पुण्यानुभावं सकल सत्व प्राणिपिं उद्धारजुया दिवंगत शान्तरत्नया कुलया सकल पुर्खापिं नं दुर्गति मोचन जुयाः अमिताभ तथागतया कुलय् सुखावति भुवने वासलाना निर्वाण मार्गफल प्राप्त जुयेमाः धयागु दुनुगलं निसें कामना यानागु जुल ।

थुगु सफुतिइ माकथं ग्वाहालि याःपिं किजा ज्ञानेन्द्र रत्न वज्राचार्य, कुमेशमान बज्राचार्य नापं सकसित सुभाय् देछाना च्वना । स्वयम्भू प्रिन्टिङ्ग प्रेस या हामापिं सुधिर वज्राचार्य व सुजित वज्राचार्य दिवंगत अबु शान्तरत्न बज्राचार्य दकिलाया पुण्यस्मृति देछाना विज्याःगु जुल । दिवंगत शान्तरत्न जु

सुखावती भुवने वासलाना सम्यकसम्बोधी ज्ञान प्राप्त जुयेमा धयागु कामना यानागु जुल । सत्जिव सकल परिवार सुख समृद्धि प्राप्त जुयाः रोगव्याधिं मुक्तजुयाः शाक्यमुनि तथागत या सुदृष्टिं न्यंकं खयाच्वने माः । सकसिया भिं जुईमा, कल्याण जुईमा अस्तु ।

सर्वज्ञरत्न बज्राचार्य
चवयबुं, धिमेंल्वहं